Activities conducted under EBSB for the month of July, 2020

L.N.D. College, Motihari

East Champaran, Bihar-845401
(A constituent Unit of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur)
NAAC accredited by B+

Sl. No.	Name of the College	Name of Activities undertaken	Date	No. of participants	Remarks
1.	**Laxmi Narayan Dubey College, Motihari**	1. National Webinar on"Moral Education"	22nd July,2020	50	Successful
		2. Participation in Webinar "Yuva Program" by Ministry of Youth Affairs, New Delhi	3rd July,2020	10	Successful

भगवान श्री राम के आचरण से नैतिकता सीखने की जरूरत

मोतिहारी | निज प्रतिनिधि

वेब संगोष्ठी

- परमार्थ जीवन का हो सर्वोत्तम लक्ष्य, नैतिक शिक्षा की जीवन में है उपयोगिता
- एलएनडी कॉलेज में दो सत्रों में 'नैतिक शिक्षा' विषय पर वेब संगोष्ठी आयोजित

एक भारत, श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) के तहत लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतिहारी में बुधवार को दो सत्रों में 'नैतिक शिक्षा' विषय पर वेब संगोष्ठी आयोजित की गई। प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. सुबोध कुमार ने कहा कि नैतिक शिक्षा की जीवन में बहुत महत्वपूर्ण उपयोगिता है। शिक्षा व नैतिक शिक्षा दोनों अंर्तसंबंधित है। व्यक्तियों द्वारा जीवन में नैतिकता के अनुपालन से ही समाज व राष्ट्र की भलाई होती है।

द्वितीय सत्र में प्राचार्य-सह-कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार ने अपने संबोधन में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आचरण से नैतिकता सीखने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि रामायण में भगवान श्री राम के भ्रातृप्रेम, राज्याभिषेक को त्याग कर पिता के आदेश अनुपालन, वनगमन के दौरान निषादराज का सहयोग, प्रजाहित में धर्मपत्नी के त्याग जैसे मूल्यों में सामाजिक परोपकार की झलक मिलती है। उनके अनुसार, परमार्थ ही जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने नैतिकता का हवाला देते हुए बताया कि भूख की स्थिति में अपना-अपना भोजन करना प्रकृति है, दूसरों का छीन कर भोजन करना विकृति है तथा परस्पर बांट-बांट कर खाना संस्कृति है। नैतिकता परोपकार का उत्कर्ष है। कार्यक्रम समन्वयक-सह-भौतिकी विभागाध्यक्ष डॉ. पिनाकी लाहा ने ऑनलाइन मंच का संचालन करते हुए कहा कि नैतिकता हमारे सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के साथ-साथ रहन-सहन, जीवन निर्वहन और कर्तव्य वहन में 360 डिग्री का बदलाव ला सकती है। सत्र के दौरान तकनीकी सहयोग व प्रश्नोत्तरी सत्र का संचालन कार्यक्रम के सह-संयोजक प्रो. दुर्गेशमणि तिवारी ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ.रीना ने किया। मीडिया प्रभारी डॉ. कुमार राकेश रंजन ने कहा कि नैतिक शिक्षा का फलक विस्तृत व बहुआयामी है। ऑनलाइन संगोष्ठी में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक, शिक्षकेतर कर्मी व छात्र-छात्राएं उपस्थित हुए।

एलएनडी कॉलेज में ईबीएसबी की राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी संपन्न

बीएनएम@

मोतिहारी। देश में गंभीर रूप से व्याप्त कोरोना कहर के कारण जहां एक ओर सदा गुलजार रहनेवाले शैक्षणिक परिसर वीरान पड़े हुए हैं वहीं दूसरी ओर वेब संगोष्ठी द्वारा सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की शैक्षणिक गतिशीलता सतत कायम है। ऑनलाइन शैक्षणिक गतिविधियों की निरंतरता में बुधवार को भारत सरकार की महत्वाकांक्षी अभियान एक भारत, श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) के तहत लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतिहारी में डॉ.पिनाकी लाहा, समन्वयक, रूसा के सौजन्य से 01:00 से 02:00 बजे तक दो सत्रों में एक दिवसीय वेब संगोष्ठी आयोजित की गई।

वेब संगोष्ठी का विषय 'नैतिक शिक्षा' था। प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. सुबोध कुमार ने गूगल मीट एप पर वेब संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि नैतिक शिक्षा की जीवन में बहुत महत्वपूर्ण उपयोगिता है।
शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा दोनों अंर्तसंबंधित है। व्यक्तियों द्वारा जीवन में नैतिकता के अनुपालन से ही समाज एवं राष्ट्र की भलाई होती है। इससे भ्रष्टाचार, लोलुपता, स्वार्थपरता, छल-कपट और असहिष्णुता पर विजय पायी जा सकती है। द्वितीय सत्र में प्राचार्य-सह-कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो.(डॉ.) अरुण कुमार ने अपने संबोधन में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आचरण से नैतिकता सीखने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि रामायण में भगवान श्री राम के भ्रातृप्रेम, राज्याभिषेक को त्याग कर पिता के आदेश अनुपालन, वनगमन के दौरान निषाद राज का सहयोग, प्रजाहित में धर्मपत्नी के त्याग जैसे मूल्यों में सामाजिक परोपकार की झलक मिलती है।

उनके अनुसार परमार्थ ही जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने नैतिकता का हवाला देते हुए बताया कि भूख की स्थिति में अपना-अपना भोजन करना प्रकृति है, दूसरों का छीन कर भोजन करना विकृति है तथा परस्पर बांट-बांट कर खाना संस्कृति है। नैतिकता परोपकार का उत्कर्ष है। कार्यक्रम समन्वयक-सह-भौतिकी विभागाध्यक्ष

डॉ. पिनाकी लाहा ने ऑनलाइन मंच का संचालन करते हुए कहा कि नैतिकता हमारे सामाजिक- आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के साथ-साथ रहन-सहन, जीवन निर्वहन और कर्तव्य वहन में 360 डिग्री का बदलाव ला सकती है। सत्र के दौरान तकनीकी सहयोग एवं प्रश्नोत्तरी सत्र का संचालन कार्यक्रम के सह-संयोजक प्रो. दुर्गेशमणि तिवारी ने किया।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ.रीना द्वारा किया गया। मीडिया प्रभारी डॉ.कुमार राकेश रंजन ने संवाद प्रेषित करते हुए कहा कि नैतिक शिक्षा का फलक विस्तृत एवं बहु आयामी है। इसके प्रोत्साहन व अमल से हमलोग वसुधैव कुटुंबकम की भावना को आत्मसात करते हुए विश्वशांति स्थापित कर सकते हैं। ऑनलाइन संगोष्ठी में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगण, शिक्षकेतर कर्मी तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित हुए।